Special Issue January 2020

VIDYAWARTA®

Peer Reviewed International Refereed Research Journal

साहित्य और समाज चिंतन

संपादक
प्रा.नवनाथ जगताप

सहसंपादक
डॉ.अनिल कांबळे

Scanned with CamScanner

36) तुलसीदासकृत 'रामचरितमानस' की कालसापेक्षता
डॉ. साळुंखे मनिषा नामदेव, कुर्डुवाडी ||109

37) मुस्लिम जन-जीवन का धर्म पर अटूट विश्वास: नजमा उपन्यास के संदर्भ में
डॉ. खुद्दूस पाटील, विजयपुर ||111

38) नई सदी के प्रथम दशक के 'खानाबदोश ख्वाहिशें' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ
डॉ. नारायण गुरूसिध्द वगली, विजयपुर ||113

39) बाँसुरी बजती रहे: नाटक एक अमर प्रेम गाथा नाटक का स्वरूप, परिभाषा, एंव तत्व-
प्रा. डॉ. संजय मुजमुले, पंढरपुर ||114

40) सूर्यबाला के कहानियों में सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण
डॉ. वापुराव विठ्ठल पाटील, विजयपुर ||116

41) नई सदी के प्रथम दशक के 'बरखा रचाई' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ
विद्या हंचाटे, विजयपुर ||118

42) डॉ. बालशौरी रेड्डी जी के उपन्यासों में चित्रित सामाजिक जीवन
प्रा. गंगाधर म. गैंड, विजयपुर ||119

43) नई सदी के प्रथम दशक के 'आखेट' उपन्यास में सामाजिक समस्याएँ
टी. माधवी, बेंगलोर ||122

44) हिंदी के महिला उपन्यासकार के उपन्यासों में चित्रित स्त्री विमर्श
डॉ. विनय चौधरी, उस्मानाबाद (तुळजापुर) ||123

45) 'कमलेश्वर' की कहानियों में चित्रित मध्यवर्गीय समाज
प्रा. नवनाथ जगताप, डॉ. अनिल प्रभाकर कांबळे, सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||126

46) 'चन्द्रकिरण सौनरिक्सा' की आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' में चित्रित नारी जीवन
प्रा. डॉ. अनिल प्रभाकर कांबळे, सोलापुर (मंगलवेढ़ा) ||130

47) 'हैलो कामरेड' नाटक में दलित संघर्ष
श्री. किसन भानुदास वाघमोडे, सोलापुर (मालशिरस) ||131

www.vidyawarta.com/03 | http://www.printingarea.blogspot.com

Scanned with CamScanner

40

सूर्यबाला के कहानियों में सामाजिक परिस्थितियों का चित्रण

डॉ. बापुराव विठ्ठल पाटील,
एस. बी. कला एवं के.सी.पी. विज्ञान महाविद्यालय विजयपुर

सूर्यबाला हिंदी की उन लेखिकाओं में से एक है, जिन्होंने अपने सृजनकर्म को गंभीरता से लिया है और निरंतरता बनाए रखी है। वे अपनी सृजनात्मक जिम्मेदारी को उन सामाजिक सरोकारों और मानवीय मूल्यों से जोडकर चलती जिनका साहित्य से गहरा संबंध होता है। परिवार समाज, मानवीय संबंध इच्छाएँ, आकांक्षाएँ सपने सपनों को पूरा करने की उत्कृष्ट पहलू संवेदना दूसरों की तकलिफों को समझने उनके साथ साझा होने की भावना ये तमाम विशेषताएँ सूर्यबाला की कहानियों में इतनी सघनता के साथ समाहित है कि पाठक स्वयं को इनमें देखने लगता है। उन तमाम स्थितियों से आलोडित हो उठता है। वे उन आडंबरों, झूठ और वर्जनाओं पर कटाक्ष करना नहीं भूलती जो मानवीय जीवन को असहज और असंतुलित बनाते हैं। कुछ उदाहरण प्रस्तुत है-न किन्नी न की नायिका को उसका प्रेम भी निराश करता है एवं उसके परिवार के लोग भी। इसलिए उसका मन उसी के शब्दों में "जाने कितने कोष्टकों में विभक्त फडफडाता रहा।" इस कहानी में मध्यमवर्ग की किरण समृध्द संपन्न मौसी और उसकी बेटी रोजी की उतरनों पर चलती है। अपमानित और प्रताडित भी होती है। किरण और पढाई के लिए बाहर से आए आकाश के बीच कुछ मुलाकातें होती हैं। प्यार का आभास-सा देती है। पर मौसी द्वारा विदेश भेजे जाने के प्रलोभन में आकर महत्वाकांक्षी आकाश रोजी से ब्याह कर लेता है। बाद में रोजी दो बच्चों को छोड मर जाती है। तो मौसी बच्चों की देखभाल के नाम पर किरण की शादी विधुर आकाश से करा देती है। किरण इस शादी से खुश नहीं थी। किरण अत्यंत जिम्मेदारी के स्थान पर कॉलेज में टीचर थी। एक मेच्चोर जिम्मेदार नियम की पक्की और कडक अनुशासन पसंद टीचर होते हुए भी अपने भरसक लेक्चरर्स के सारे गुणों से भरपूर किरण की शादी नहीं हुई थी उसी के शब्दों में "अपने विवाह के लिए दहेज जुटा पाने की मेरी हैसियत नहीं थी।"

किन्नी इस मजबूत शादी के बारे में कहती है कि "ओह! तो तुम्हारा मतलब है, मैं इस नरक की टीचरी छोडकर स्वर्ग में आयागीरी करने जाऊँ।" सूर्यबाला जी स्त्री के सहजभावों को स्पष्ट अकने का प्रयास किया है। क्योंकि हर पल हर क्षण को को ही टूटी-फूटी सपनों को अपने जिम्में स्वीकारना पडता है। समाज में शादी एक जन्म सिध्दांत अधिकार बन चुकी है। एक लडकी की शादी करना है तो दहेज से लेकर उसकी संपत्ति पर भी लोग विशेष ध्यान देकर ही शादी कर लेते हैं। सब कुछ पैसा धन दौलत ही है स्त्री का कुछ कीमत मायने नहीं रखता।

'कागज की नावे, चाँदी के बाल' इसमें प्रति काव्यात्मकता का भाव है। इस कहानी में उच्च और नीच भाव का उजागर हुआ है। कथानायक, नायिका सहज निष्पाप की लंबों को याद करती है। लडका-लडकी बचपन में एक स्कूल में पढते है। लडका गरीब घर का था। लडकी राजी बडे घर की राजकुमारी की तरह उसका जीवन था। लडकी की माँ नहीं थी उसका देखभाल अन्य नौकर वर्ग पालन पोषण करते थे। राजी के पिता उसको बंधनों में रखना चाहते थे क्योंकि उसकी माँ से तलाक लेकर कोर्ट से लादे थे। लडकी को अक्सर लडके के डिब्बे से रोटी पसंद थी। रोटी खाने के लिए वह लडका राजी को अपने माँ से मिलवाने ले जाता है। तब वहाँ पता चलता है कि राजी की माँ जीवित है। पर लडकी को उस लडके के घर जाने के जुर्म में पिता से डाँट फटकार मिलती है। उसके बाद वह लडका और उसका परिवार गाँव छोडकर चले जाते हैं। परंतु लडकी के मन में वे यादें बुजुर्गावस्था तक घर कर जाते हैं। इस कहानी का अंत राजकुमारी के चाँदी के बाल को बुजुर्ग हो गई लडकी के चाँदी से स्वेत बालों से जिस तरह जोडा गया, वह सूर्यबाला जी विलक्षण रचना विध का परिचय दिया। कल्पनाशीलता का भाव उत्कृष्ट हैं क्योंकि कभी-कभी बचपन के यादें ही असल में जीवन को बरकरार रख पाते हैं। समाज में तलाक शुदा माँ-बाप के कारण बच्चों पर क्या प्रभाव पडता है इस विषय को प्रस्तुत किया हैं। बच्चों के कोमल मन पर होनेवाले आघातों पर समाज का परिवार ध्यान नहीं होता है। कई परिवार के लोग अपने बच्चों गरीब बच्चों के साथ खेलने बात करने पर पाबंदी लगाते हैं। इस कारण निष्पाप बच्चे अपने मन को अपने सपनों में सजाते हैं।

सूर्यबाला की इस कहानी में आर्थिक सामाजिक विघटन के इस संवेदनहीन परिप्रेक्ष्य ने मनुष्य की स्वाभाविक करूणा और मानवीय सक्रियता को खत्म होने के भाव को प्रस्तुत किया है क्योंकि मानवीय संबंधों को टूटने के कारण आज पूँजीवादी लोगों के कारण समाज का रूप विद्रुपता का रूप धारण कर रहा है। भारतीय समाज का चित्रण अपने नजरिए के अनुकूल परिवर्तनात्मक बनता जा रहा है। "विशेष रूप से सूर्यबाला की कहानियों में नारी संवेदना केंद्र में होती है। घर-परिवार समाज में साँस लेती हुई नारी रिश्तों की जड होती है। परिवार और मनुष्यता की बुनियाद होती है नारी पात्र लेकिन उन्हें केवल विवश, हताश, निराश दिखाना

Scanned with CamScanner

उन्होंने पसंद नहीं किया। समाज के जीवन के तमाम पहलुओं को सूक्ष्मता से छुआ है। जैसे एक टूकडा कस्तूरी प्रेम कहानियों में स्त्री मन की गुप्तचरी के माध्यम से सूर्यकांत नागर ने स्त्री मन की गुप्तगामिनी को प्रकट किया है। "स्त्री मन की गुप्त भाव को स्त्री ही लिख पाती है।"

'बिन रोई लडकी' बारीकी ख्याली की सलीके से बुनी गई अवसाद से भरे अछूते प्रेम की मर्मस्पर्शी कहानी है। लडकी के आंतरिक भाव को निछोडकर रखने का कार्य लेखिका ने किया है। बेबसी समाज में कहाँ एक लडकी के ऊपर लडके के माँ ने प्रहार करती है। अपना कुछ अता-पता भी नहीं बताती है। इससे पाठक स्वयं समझ सकते हैं कि बिन रोई लडकी के मन पर क्या गुजरा होगा।

'पलाश के फूल नहीं ला सकूँगा' इस कहानियों में भी प्रेमियों पर आघात होते हुए दिखायी देती है। समाज और प्रेम, रिश्ते-नाते इन सभी में एक अटूट बंधन दिखाई पडता है। कभी कभी पाठक असमंजस में पड जाते हैं कि अनूप और वृंदा का कोई गलती नहीं होते हुए भी असत्य आरोप के कारण वृंदा के पिता पर आये इल्जाम का कुप्रभाव लडकी के वैवाहिक जीवन पर पडता है। अनूप वृंदा को चाहकर भी प्रेम को स्वीकार नहीं सकता है।

'मानसी' कहानी में सूर्यबाला जी किशोरावस्था के आकर्षण को अत्यंत मर्मस्पर्शी रूप से प्रस्तुत किया है। प्रेम का सच्चा रूप पता चलता है कथा नायक भूवन प्रोफेसर पच्चीस वर्ष पहले अपनी छात्रा कृष्णा से प्रेम था। परंतु सामाजिक नियमानुसार प्रकट नहीं कर सका कुछ वैसा ही आकर्षण कृष्णा की बेटी किरण का भूवन के प्रति अलौकिक प्रेम को प्रस्तुत किया है। एक कन्नड फिल्म में पुट्टण्णा कणगाल (डायरेक्टर) के इस फिल्म में बेटा अपनी मम्मी से प्रेम करता है। मम्मी प्रसिध्द हिरोइन है। पच्चीस साल पहले ही उस हिरोइन को नाटक में काम करते देख उस लडके के पिता ने उस हिरोइन से शादी की थी। परंतु उस नायिका का नाटक में काम करना उसको पसंद नहीं था। इसलिए वह युवक छोटे से बच्चे को विदेश में रख देता है। जब पच्चीस वर्ष बाद वह युवक बन आता है तब जाने अंजाने उस हिरोहिन से आकर्षित हो जाता है। परंतु उस लडके कोवह माँ है इस बात का पता ही नहीं था। उस माँ को यह युवक उसका बेटा है इसका पता नहीं था। अंत में एक दिन पिता को पता चलता है। और वह खूद हिरोइन को बताता है कि स्वयं उसका बेटा ही उसके प्रेम पाश में बंद चुका है। परंतु माँ उस लडके से ममता भरी नजर से ही देखती है। अंत तक वे दोनों मिलते ही नहीं। इस प्रकार समाज में रहते कुछ न कुछ घटनाएँ घटती है।

'कतार बंद स्वीकृतियों' सूर्यबाला जी की कहानियों में ये कहानी की विशिष्टता यह है कि स्त्री प्रेम की वह मूर्ति है। जो अपने मन को त्याग और बलिदान की शूली पर चढाती है। इस कहानी की नायिका सिस्टर एंसी प्रभु ईशु के गीत को गाती है। वह एक स्कूल में संगीत सीखाती है। उसके जीवन में विश्वम् नामक युवक से प्रेम हुआ था। परंतु एंसी क्रिश्चयन और विश्वम् हिंदु होने के नाते इनके परिवार वालों का शादी से विरोध रहा। विश्वम कुछ बनकर दिखाने के लिए एंसी को छोडकर जाता है। उसे प्रतिज्ञाबध्द किया था कि "जब तक लौटकर न आऊँ प्रतिक्षा करती रहेगी।" तब एंसी ने स्वीकृती दी थी। अंत तक विश्वम् नहीं आता है। एंसी प्रेम को त्याग देती है। और बाद में वह आदिवासी लोगों की सेवा में अपना जीवन समर्पित करती है।

सूर्यबाला जी इस कहानी द्वारा यह समझाने का प्रयास किया है कि जाती, सामाज, परिवार, प्रेम, संकुचितता से बढकर भी एक असीम कार्य है वह त्याग या समर्पण भाव समाज की उन्नती में सहकारी है। सौच लिजिए आज सिस्टर निवेदिता नहीं होती तो? भारत के प्रति प्रेम कैसे बढ पाता था। मदर तेरेसा, माँ मेरी, सिस्टर अलफूँजा अक्कमहादेवी, मीरा जैसे नाम तारों जैसे नहीं चमकता स्त्री को स्त्री ही जान सकती है।

'वे जरी के फूल' कहानी में सामजिक उतार चढाव को प्रस्तुत किया है। रूक्की लडकी के माता-पिता गुजर जाने के बाद वह अकेली हो जाती है। और मामी पर निर्भर रहती है। वह सुंदर थी लेकिन दहेज के कारण उसकी शादी नहीं हो पाती है। इस संदर्भ में सूर्यबाला जी स्पष्ट किया है कि समाज में अनाथ भाव का क्या परिणाम पडता हैं।

'पीले फूलों वाली फ्रॉक' इस कहानी में मनिषा एक गृहणी है। उनके यहाँ एक आगंतुक कौशल वर्मा आते हैं। जो मनिषा को बचपन से जानते हैं। कौशल वर्मा अपने किशोरावस्था के प्रेम को सामाजिक भय के कारण नहीं बताता है। परंतु कौशल के सामने जब गृहणी के रूप में मनिषा आती है तब बाईस वर्ष के पहले की यादों को बताते हैं क्योंकि पीले फूलों वाली फ्रॉक में उस लडकी को जीवन भर के लिए सहज कर रख लिया था। सूर्यबाला जी का यह स्पष्ट मत रहा है कि स्त्री और पुरूष अपने इच्छानुसार जीवन को सजा सकते हैं। कुछ सपनों को समाज के भय के कारण पूर्ण नहीं कर सकते।

'क्या मालूम', 'तलाश' आदि कहानियों में भी सामाजिक रूक के कारण अपने मन के अंतर द्वंद्वों को प्रकट नहीं कर पाते हैं। कितने लोग अपनी इच्छाओं को जीते जी मार देते हैं इसका एक झलक इन कहानियों द्वारा पता चलता है। सूर्यबाला को कहानियों में संवेदना की कथावस्तु प्रस्तुत किया है। सूर्यबाला जी की आस्था भारतीय मूल्यों में है, अत: दबी-छिपी स्मृतियाँ नायिका के सुखी सामाजिक तथा पारिवारिक जीवन में बाधक नहीं बनती।

❑❑❑

Scanned with CamScanner